।। सन्मान के शब्द ।।

श्री श्री श्री श्री श्री १०००८ स्वामी शिशू सत्यविदेहानंद सरस्वती विरचित

।। सन्मान के शब्द ।।

हे माँ दुर्गे आप के चरण कमल हमारे हृदय में रहें,

आप हमारे मानस में नित्य बसो ।

हे माँ दुर्गे

दया करो,

क्षमा करो,

कृपा करो,

ममता करो,

करूणा करो,

रक्षा करो,

छोटी कन्या बनकर हमारे साथ खेला करो ।।

जगत मेरा है, फिर खाली क्या रहे । कहता स्वामी विदेही, समझो गुरुकृपा से ।।१

संनधान जो जोडा, विधान विकार छोडा । भव बंधनो के धागे, समझो गुरुकृपा से ।।२

विचार सिर्फ मात्राओं का, ह्रस्व दिर्घ देखे । देवी की विलांटी, समझो गुरुकृपा से ।।३

हेरम्ब यही है अम्ब, रहे नित्य उघडबंब । न रहे शुंड में दंभ, समझो गुरुकृपा से ।।४

सत्य की तलाश कहाँ कहाँ, बुध्दिवादी जहाँ जहाँ । अध्यात्म का अंत, समझो गुरुकृपा से ।।५

द्वैत का दैत्य, छोड दिया सत्व का सत्य । रजतम के आगे चैत्य, समझो गुरुकृपा से ।।६

अद्वैत का बांध, उसे अनुभूति का सांध । अनुभव देखे आनंद, समझो गुरुकृपा से ।।७

अनुभूति यह अनाहत, प्रसत्तरा प्राण भि आहत । गायत्री निज जो देखत, समझो गुरुकृपा से ।।८

उष्ण सर्दी का पसारा, नेती, नेती देते हैं पहारा । सुखः दुखः का व्यापारा, समझो गुरुकृपा से ।।९

प्रेम का परकोटा, उसमे मन का मनोरा । आनंद की खिडकी, समझो गुरुकृपा से ।।१०

दया का दरवाजा, करुणा की कडीयाँ । शांति का सागर, समझो गुरुकृपा से ।।११

सन्मान का मुकुट, महत का भृकुट । योग मार्ग के मंदिर, समझो गुरुकृपा से ।।१२

भक्ति ज्ञान संत, यहि जानो वेदान्त । प्राप्ति मोक्ष का अंत, समझो गुरुकृपा से ।।१३

दिखता बाहर जो ब्रह्म, रहे अंदर का कदम्ब । इसका सम्यक ज्ञान, समझो गुरुकृपा से ।।१४

शाश्वत भोजन जो लेखे, सत्व से आत्मा देखे । रजतम का धरमातमा, समझो गुरुकृपा से ।।१५

स्वामी विदेही बोले अभि-अभि, प्राण निकले देखे जभि-जभि ।

त्राण यह मंत्र का, समझो गुरुकृपा से ।।१६

अनन्त से अनन्त, प्राण से निकले वसंत । प्राण के बिना रहे जिवंत, समझो गुरुकृपा से ।१७

जगत का दिखता है भ्रम, पडता योगी को परिश्रम । इड़ा-पिंगला कदम्ब, समझो गुरुकृपा से ।।१८

मन फिरता है घर घरतासे, उसे रेके प्रखरता से ।
उठाकर सुषूमना को अकड़ता से, समझो गुरुकृपा से ।।१९
पडती है जिसे प्राणो की भुख, हैं वही ब्रह्म फुक ।
शिवोहम का जयकारा, उडाता है हुक, समझो गुरुकृपा से ।।२०
की प्रेम से जो पुजा, उसे नही तोड दुजा । धूप दिप प्राण तेजा, समझो गुरुकृपा से ।।२१
कुंकु लगाइए करुण, अक्षता दिखे दारुण । आवाहन पुष्प वरुण, समझो गुरुकृपा से ।।२२
पद्मासन का पद्म, सिध्दासन का सिध्द्म । मेरुदंड को करे प्रणाम, समझो गुरुकृपा से ।।२३
तिल की तितिक्षा, उर्ध्वनासिका में प्रतिक्षा । शाम्भवि दृष्टि प्रतिरक्षा, समझो गुरुकृपा से ।।२४
मनन करते रहे मंत्र, यहि सफलता है तंत्र । सुमेरु उलांघो कैसे, समझो गुरुकृपा से ।।२५
ध्यान मे रहे नित्य ध्यास, पकड के मन की कास । सहन करो अव्यक्त त्रास, समझो गुरुकृपा से ।।२६
माहिती (जानकारी), तंत्रज्ञान, यदि कर्म का है अधिष्ठान ।
पकड के रहो स्वाधिष्ठान, समझो गुरुकृपा से ।।२७
गर्भवास में रहे ध्यान, मनन करते रहो तत्व ज्ञान ।
तलवार को छोड के पकडो म्यान, समझो गुरुकृपा से ।।२८
बरसते है सदा अक्षर, पंच भूतों को करो स्वाक्षर । चिंतन करो निरंतर, समझो गुरुकृपा से ।।२९
दिखते है आकाश में नक्षत्र, आत्मा इस देह का वस्त्र ।
करो चित्त को निरवस्त्र, समझो गुरुकृपा से ।।३०
नवरात्र का ज्ञान, नवद्वार का विधान । नवधा भक्ति का सार स्थान, समझो गुरुकृपा से ।।३१
मुख मे रहे सिध्दांत, सुनो बोलो नित्य वेदान्त । शिष्य! रहो ऐकांत, समझो गुरुकृपा से ।।३२
सप्तशती का सार, बोलो सुनो वारंवार । षडशत्रुओं का परिवार, समझो गुरुकृपा से ।।३३
मुल मे है जो मुलाधार, उसे नही परिवार । पद्म सिध्द का प्रकार, समझो गुरुकृपा से ।३४
सेवा यही पाया, दिखे वहाँ महामाया । सद्गुरु की वही छाया, समझो गुरुकृपा से ।३५
नाग नारायण का भाई, दो उसे मुलाधार मे मिठाई ।
उसे सहस्त्रार मे देखे नित्याई, समझो गुरुकृपा से ।।३६
दिप अग्नि का किरण, उसे नहि है मरण । कहे स्वामी विदेही शरण, समझो गुरुकृपा से ।।३७
नाम-समुंद्र का डोह, उसमे न रहे किंचीत भी मोह । क्षय कर दो मोह-डोह, समझो गुरुकृपा से ।।३८
मणिपूर का पूर, उसमे दिखे आकर्षण नूर । आनंद जो भरपूर, समझो गुरुकृपा से ।।३९
आनंद का नाम देवता, क्षय होती रहे वहा भयता भयता । यही देवता, समझो गुरुकृपा से ।।४०
स्वाद अदिष्ठान देखे, स्वादिष्ठान मे जगत फेके । तेरा मेरा यही रहे, समझो गुरुकृपा से ।।४१
अनाहत आहत सारे, सिध्दासन में बहुत सारे । शिवशक्ति संगम तारे, समझो गुरुकृपा से ।।४२
विशुध्दी शुध्दी मन की, चित्त विलास मे बुध्दी रहे ।
बुध्दी शुध्दी मे ब्रह्म देखे, समझो गुरुकृपा से ।।४३
आज्ञा केवल मन की, चित्त अद्वैत रहता है । अद्वैत द्वैत निरंजन, समझो गुरुकृपा से ।।४४
सद्गुरु मेरी माता, माता तुम्ही हो दाता । दाता में साक्षात्कार रहता, समझो गुरुकृपा से ।।४५

प्रस्तार लेख मन का, विचार बिंब देखे । दिव्य से मन सृष्टी, समझो गुरुकृपा से ।।४६
सृष्टी मे पुष्ट मंत्र, मंत्र से प्राण निकले । गथ यह मंत्र-देखे, समझो गुरुकृपा से ।।४७
ब्रह्म की जो माया, वही सृष्टी की अनुकाया । दिखे सर्वत्र महामाया, समझो गुरुकृपा से ।।४८
योग विश्व में ऊर्ध्व, समष्टी रुप की प्राप्ती । व्यष्टी के अनाहत धागे, समझो गुरुकृपा से ।।४९
भाव रुप प्रदिर्घ, दिर्घ रुप माते । योग प्राप्ती नित्यम, समझो गुरुकृपा से ।।५०
अनुभूतियों की तिजोरियाँ, उसमे नित्य करो चोरियाँ । अनुभव चौर कैसा, समझो गुरुकृपा से ।।५१
माधुर्य का दर्शन, सहज सहवास आकर्षण । दर्शन भक्ति सकर्षण, समझो गुरुकृपा से ।।५२
हे नारायणी तुझमे, गंध ज्ञान कण कण में । आदिशक्ति समस्त क्षण में, समझो गुरुकृपा से ।।५३
भाव भंगिमा का पथ, स्तोत्र बसे घटा घट । कालरात्री का परीपाट, समझो गुरुकृपा से ।।५४
प्रारब्ध-भोग-कर्म, संचित यही विक्रम । कर्म पकडो सुधर्म, समझो गुरुकृपा से ।।५५
यत्र-जप-पाठ-पुजा, उपवास सार बिजा । बिज गर्भवास तिजा, समझो गुरुकृपा से ।।५६
अनन्त सार विश्व, यज्ञ ब्रह्मौदन अश्व । प्रग्वर्य सुर्य विश्व, समझो गुरुकृपा से ।।५७
प्रग्वर्य ताप मृत्यु, यह ब्रह्मचित दर्जा । चितावि‍लास की उर्जा, समझो गुरुकृपा से ।।५८
शब्द स्पर्श रुप, रस-गंध का धुप । आरती योग कुप, समझो गुरुकृपा से ।।५९
प्रतिभा की प्रतिमा, सार्थ प्रज्ञ सरिता । आरती अद्वैत करीता, समझो गुरुकृपा से ।।६०
मृत्युंजय औदन कैसा, ब्रह्म संज्ञा जैसा । अनाहत शब्द ऐसे, समझो गुरुकृपा से ।।६१
सार्थक जीवन का बिंब, भक्ति से होए ओलाचिंब । मिठा लगे कृत निंब, समझो गुरुकृपा से ।।६२
निबंध यह अद्वैत, सारांश देखे द्वैत । द्वैत अद्वैत सज्ञा, समझो गुरुकृपा से ।।६३
सहवास का सुख, यही नित्य महादुख । ब्रह्म व्यक्त महाभुख, समझो गुरुकृपा से ।।६४
नित्य रहो सज्ज, आत्मा को जानो निर्ल्लज । परमात्मा यही अणु प्रसज्ज, समझो गुरुकृपा से ।।६५
समष्टि का लगाये बंध, उस मे व्यष्टि का महाबंघ । बहता रहे नित्य सुगंध, समझो गुरुकृपा से ।।६६
मान-सम्मान को जाने शुल, अपमान आभुषण फुल, गालियाँ ।
नित्य अनुकुल, समझो गुरुकृपा से ।।६७
संहार यह पुष्पहार, अपमान का व्यवहार । पुर्ण स्वीकृति का परिवार, समझो गुरुकृपा से ।।६८
अपमान का पुष्पहार, सातत्य का व्यापार । अहं भाव का परिहार, समझो गुरुकृपा से ।।६९
सिपसे निकले मोती, समष्टि परीपुर्ण रहती । सधन्यवाद भाग जाती, समझो गुरुकृपा से ।।७०
मान औदुंबर, अपमान दिगंबर । विश्वास श्रध्दा अंबर, समझो गुरुकृपा से ।।७१
सप्रेम नमस्कार मेरा, गुरुमाता सन्मान तेरा । दुर्गे कृपा ही केवलम्, समझो गुरुकृपा से ।।७२
संगम मैथुन जीव्हा, शिवशक्ति देखे ऊर्ध्व । खेचरी मुद्रिका रसलाव्हा, समझो गुरुकृपा से ।।७३
स्वर ज्ञान कैसे पहचाने, आकाश तत्व में प्राण बचाने ।
वस्त्र वायु में नचाने, समझो गुरुकृपा से ।।७४
इड़ा नाड़ी का मद्य, पीकर योगी रहे सज्ज । पिंगला के साथ गमन लज्ज, समझो गुरुकृपा से ।७५
इड़ा में प्रकाश नित्य, पृथ्वी में लोटते रहे सातत्य ।
लगाकर नासिका बंध ऐसे, समझो गुरुकृपा से ।।७६

पिंगला के साथ सहवास, पानी में सोकर प्रवास । प्रवास का पसारा, समझो गुरुकृपा से ।।७७
सुष्मना वृहद वेग, रोककर अग्नि में आवेग । स्वामी विदेहानंद संवेग, समझो गुरुकृपा से ।।७८
वासना के पांव चार, चित, बुद्धि, अहं, व्यभिचार ।
श्वासोंपर करे बलात्कार, समझो गुरुकृपा से ।।७९
दृष्टि सुष्मना में दंड, समानता आकाश प्रचंड । महाबंध का उद्रेक बंड, समझो गुरुकृपा से ।।८०
आयुष्य सौभाग्य जलाये, आत्मा को नित्य जलाये । सुष्मना में पीटें कैसे, समझो गुरुकृपा से ।।८१
दिव्य गुरु, मानवगुरु, सिध्दगुरु, ब्राह्मण, अपहरण नित्य शुरु ।
अपहरण की कला कैसी, समझो गुरुकृपा से ।।८२
जगत यह मात्र भ्रम, सत्य कहता स्वामी विदेही परिश्रम ।
दुर्गा कृपा से प्राप्त सत्य ब्रह्म, समझो गुरुकृपा से ।।८३
हे भोले शिष्य, गुरु सेवा यही भिक्षा । गुरु बिना नही दिक्षा, समझो गुरुकृपा से ।।८४
दियते ज्ञानम, विज्ञानम, क्षियते पाप-राशयः । वही दिक्षा श्वास कृपा की, समझो गुरुकृपा से ।।८५
ब्रह्मदंड का संवेग, लगाकर पृथ्वी में आवेग । जप तप का ऊर्ध्व वेग, समझो गुरुकृपा से ।।८६
माँ बाप की सेवा, रज, रेतस का मेवा । सेवा में भस्म पाप देवा, समझो गुरुकृपा से ।।८७
ओंकार साधन पिंगला, बनाकर अग्नि में बंगला । आत्म मंथन की कला, समझो गुरुकृपा से ।।८८
चित्त प्रवाह का वेग, तेजसे बांधो-वायु रोग । तपश्चर्या में कैसा भोग, समझो गुरुकृपा से ।।८९
षटचक्र का जो भेदन, अनाहत चक्र में करो क्रंदन ।
वह भेदन त्वरिता छेदन, समझो गुरुकृपा से ।।९०
आत्मनुसंधान तलवार, सप्ताषत सहस्त्र नाड़ी परिवार ।
एक पंचाषत दरबार, समझो गुरुकृपा से ।।९१
वाचस्पति का हौवे गजर, मुलाधार से खिचकर हजर । करो प्राण गैर हजर, समझो गुरुकृपा से ।।९२
सम्यक रुपेण इड़ा, नाहि सुष्मना में कोई पीड़ा । विश्वोदरा-नाड़ी को तोडो, समझो गुरुकृपा से ।।९३
कुंडलिनी जागृत गुरु कृपा, रंक शिघ्र बने नृपा । शब्द का नाद विद्रुपा, समझो गुरुकृपा से ।।९४
समाधी वारणा में निजा, हस्तीजिव्हा की सजा । पुरस्कार भ्रूण बोझा, समझो गुरुकृपा से ।।९५
अष्टांग योग नवभक्ति, स्वामी विदेहानंद की शक्ति । साम्राज भक्ति शक्ति, समझो गुरुकृपा से ।।९६
शिस्न तोडो नित्य, यही योगी जानो सत्य । वेदान्त की भाषा सत्य, समझो गुरुकृपा से ।।९७
वक्रतुण्ड की पुजा, धुप दिप मात्र छाया । गणेश गजानन की सारध काया, समझो गुरुकृपा से ।।९८
स्वाद आज्ञाचक्र में पेय, अनावरण का आवरण देय । विवस्त्र सोता है संदेह, समझो गुरुकृपा से ।।९९
अंतरिक्ष की जो प्रस्तारता, नासिका में जो विस्तारता ।
प्रभावलीकी अनुदेयता, समझो गुरुकृपा से ।।१००
षटचक्र नाड़ी रोख, कामना प्रश्वास भोग । अरे! भोग जागृत योग, समझो गुरुकृपा से ।।१०१
गायत्री दिव्य चोर, साधक बने महाचोर । अपराधी विश्व घोर, समझो गुरुकृपा से ।।१०२
विशुद्धि मणिमंडप, सहस्त्रारा भरण भेष । वस्त्रों का प्रभरण घोष, समझो गुरुकृपा से ।।१०३
हे अम्ब तुम्हारी कृपा, समाधि भोग स्वरुपा । कृत-कृत चरण दीपा, समझो गुरुकृपा से ।।१०४

कर्म फल आश्रय हेतू, चित समुद्र में जोडकर सेतु ।
वासनाओं का प्रज्वलित केतु, समझो गुरुकृपा से ।।१०५
आत्माबोध से शांति, यही परमात्म सुत्र क्रांति । बोध प्रबोध की भांति, समझो गुरुकृपा से ।।१०६
सत्व मान प्रमेह, दृष्य, भाव, विचार, अवलेह । द्रष्टा, भाव, विचार स्नेह, समझो गुरुकृपा से ।।१०७
शब्द अक्षरो की अग्नि वर्षा, सिर्फ (मात्र) प्रवचनो का उदण्ड खर्चा ।
चेष्टा, उपदेश का पर्चा, समझो गुरुकृपा से ।
।। श्री दुर्गा अर्पण मस्तु ।।

।। ॐ कुल कुण्डलीनी श्री दुर्गा ।।

हे चिती - भगवति सहगमन से
हे भिती - भगवति महगमन से
हे रिक्ति - भगवति स्वमनमन से
हे शक्ति - भगवति दहगमन से
प्रकाश से प्रकाश में, धुवे से धुवे में,
हवा से हवा में, गवा से गवा में,
प्रचण्ड आकाश से शुन्य में, शुन्य से महाशुन्य में,
महाशुन्य से अणु में, अणु से महत में,
महत से नाद में, नाद से भृंग में,
भृंग से श्रृंग में, श्रृंग से अहंकार में,
अहंकार से घटाकाश में, घटाकाश से महाकाश में,
महाकाश से प्रणव में, प्रणव से बिंदु में,
बिंदु से महाबिंदु में, महाबिंदु से प्रवर्ध में,
प्रवर्ध से रुद्र में, रुद्र से महारुद्र में,
महारुद्र से विहीमान में, विहीमान से सम्प्रेक्ष में,
सम्प्रेक्ष से दर्शन में, दर्शन से साक्षात्कार में,
साक्षात्कार से आत्मबोध में, हे चिती दुर्गा चित विलास में,
विलसत तेरे चरण कमल हमें परमबोध प्राप्ती कर देवे।
कहता रहूं नित्य मैं तम में दम, दम में गम,
गम में सम, सम में यम, यम में रम, रम में कम,
कम में थम, थम में ळम, ळम में हम,
हम में णम, णम से नम, नम से बम,
बम से इदम, इदम से नित्यबोध, नित्यबोध से परममुक्ती,
परममुक्ती से तत्वमसी, तत्वमसी में शिवोहम,
शिवोहम में अहंब्रह्मास्मि।